

सहमानं विज्ञाप R. 1, 48, 19. 3, 16, 29. सहमानस्य तत्सर्वं विज्ञाप nachdem er innegeworden, dass dieses Alles von Indra komme, R. 1, 64, 11. Etwas in Etwas erkennen: पैलस्त्यः कथमन्यदारकृषो देवं न विज्ञातवान् PĀNKAT. II, 4. Jmd als — ansehen, halten für: मानुषो मा विज्ञानीहि MBH. 3, 2586. 2475. तपौरसं विज्ञानीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितम् M. 9, 166. 260. 2, 135. भर्तुः पुत्रं विज्ञानति sehen ihn als Sohn des Gatten an 9, 32. त्रिचतुरेषादेषो मा विज्ञापि man halte es nicht für ein Substitut von त्रि und चतुर Sch. zu P. 7, 2, 100. स्थानी श्रेष्ठस्य संज्ञा मा विज्ञापि KĀC. zu P. 4, 1, 56. इत्यवधिर्मा विज्ञापि Sch. zu P. 4, 56. Sch. zu P. 8, 2, 38. — 2) in der Bed. des caus. Etwas auseinandersetzen: तदेतन्मे विज्ञानीहि यथाहुं मन्दधीर्हुरे। सुखं बुधेयं डुर्वाधम् BHĀG. P. 3, 28, 30. — Vgl. विज्ञा, विज्ञान, विज्ञेप, अविज्ञानत्, अविज्ञात. — caus. Etwas kundmachen, verkünden, berichten, seine Meinung kundthun, sich aussprechen: यदैवं (मनः) वेत्याहुं (वाक्) तदिज्ञपयाम्यहं संज्ञपयामि ÇAT. BR. 1, 4, 5, 10. वाग्वा स्यवेद् विज्ञापयति यजुर्वेदम् u. s. w. KHĀND. UP. 7, 2, 1. समीक्षणे विज्ञापयत: LĀTJ. 3, 8, 3. एवं संज्ञीवी विग्रहमत्वं विज्ञापयामास PĀNKAT. 152, 5. किं स्वामिपादानामये ऽस्त्वं विज्ञाप्यते 23, 14. तविवेदनकरापाम्। व्याजिज्ञपत् RĀGĀ-TAR. 3, 50. स्वचिकीर्षितं यत्। विज्ञापयामास BHĀG. P. 1, 19, 12. वाक्यं विज्ञापयामास गुणवदापवर्जितम् R. 5, 90, 17. न्यासभूतमिदं रज्ये तव विज्ञापयाम्यहम् ich verkünde dir, dass ich diese deine Herrschaft nur als ein bei mir niedergelegtes Pfand betrachte, 4, 9, 5. तैः: — दुर्दराजस्य विज्ञापम् PĀNKAT. 198, 8. स्मरन् — विज्ञापितम् BHĀG. P. 3, 6, 10. विज्ञापयाम् man thue kund DHŪRTAS. 89, 4. दृतः प्राप्तो व्यजिज्ञपत् RĀGĀ-TAR. 4, 61. एकाते विज्ञापयामि VET. 3, 14. PĀNKAT. 71, 25. DAÇAK. in BENF. Chr. 180, 2. ग्रनतरं विघ्नस्वात्र वयं विज्ञापयामदे so v. a. wir bitten darum HARI. 8541. Mit dem acc. der Person Jmd Etwas begreiflich machen, belehren, Jmd zu wissen thun, Jmd in Kenntniss setzen, zu Jmd sprechen, Jmd Etwas vortragen, Jmd mit einer Bitte, Frage angehen: व्येव वा ज्ञापयिष्यामि ÇAT. BR. 14, 3, 1, 15. भूय एव मा भगवान्विज्ञापयत् KHĀND. UP. 6, 5, 4. अहं स्वामिनं विज्ञाप्य तथा करिष्ये यथा स्वामी वर्धं करिष्यति PĀNKAT. 69, 12. 71, 5. विज्ञापयामान R. 5, 63, 14. ÇAK. 61, 11. RĀGĀ-TAR. 4, 66. भूयं चर्मकरो व्यजिज्ञपत् 65. KATHĀS. 12, 7. VID. 123. DAÇAK. in BENF. Chr. 191, 3. 192, 20. शश्रूजनं सर्वमनुक्रमेण विज्ञापय प्राप्तिमत्प्रणामः (folgen die zusprechenden Worte) RAGH. 14, 60. VIKR. 3, 13. सर्वान्विज्ञापयामि वः। । नान्यथा तद्व वात्तर्व्यमस्मत्पेक्षानुकम्पया ॥ MBH. 3, 34. देवों प्रणम्य व्यजिज्ञपत् PĀNKAT. 199, 19. VID. 92. प्रणम्य शिरमा देवों विज्ञाप्युपचक्रमे (wohl विज्ञाप्युपचक्रमे) HARI. 9433. विज्ञापयत ITIH. bei Ros. zu RV. 1, 6, 5. RAGH. 1, 73. 2, 67. HIT. 59, 20. विज्ञाप 67, 19. KATHĀS. 3, 72. 4, 72. 6, 135. RĀGĀ-TAR. 6, 28. स्त्रावा स्त्री प्रातरूप्याय पतिं विज्ञापयेत्सती। उपवासार्थमय वा त्रतकार्यम् befragen, angehen in Betreff von HARI. 7768. पुष्माकमपवर्गार्थं विज्ञापते व्यलनो मया MBH. 1, 8461. समाप्तविद्येन मया महर्षिविशापितो ऽभुद्गुरुद्विषापै RAGH. 3, 20. व्याडिन्द्रदत्ताभ्यां विज्ञापते दत्तिणां प्रति KATHĀS. 4, 93. शापातं प्रति विज्ञापतः 2, 20. Jmd in Kenntniss setzen von, mit doppeltem acc.: व्यजिज्ञपतं राजानं क्रान्तराजामनं प्रजाः (acc.) RĀGĀ-TAR. 3, 241. — pass. mit der Endung des act. offenbar werden: यदै वाङ्मार्भविष्यत्वं धर्मं नाधर्मं व्यज्ञापिष्यत्वं सत्यं नानृतम् KHĀND. UP. 7, 2, 1. — Vgl. विज्ञापति, विज्ञापक, विज्ञापन, विज्ञापनीय. — desid. zu erkennen —, kennen zu lernen

wünschen: तद्विज्ञापस्त्व TAITT. UP. 3, 1. fgg. विज्ञानं भगवो विजिज्ञासे KHĀND. UP. 7, 17, 1. एतदेवाखिलम् — विजिज्ञासामि BHĀG. P. 5, 16, 2. — Vgl. विजिज्ञासा, विजिज्ञासितव्य, विजिज्ञास्य.

— अभिवि innewerden, erfahren, wahrnehmen: (स्वचम्) एतां वाव वयं भरेत्यु शस्यमानामभिव्यजनीम (sic) इति AIT. BR. 3, 18. श्रापं तं ते ऽभिविज्ञापय कृतवतः किमुतरम् MBH. 1, 1565. मृत इत्यभिविज्ञापय व्यरम् HARI. 1033. कथंचिदभिविज्ञापय विवर्णवदनं कृशम्। धातरं भरतम् R. 2, 101, 1.

— प्रवि im Einzelnen —, genau kennen: यः स्त्रायूः प्रविज्ञानाति वाच्याश्चायतरास्तथा SUÇA. 1, 342, 3.

— प्रतिवि stets sich klug verhalten: स्मरति सुकृतान्यव न वैराणि कृतान्यपि। सतः प्रतिविज्ञानतः MBH. 2, 2424. 2442.

— संवि Jmd (gen.) zusprechen, raten: श्रद्धा प्रवर्तिते चक्रे तथैवादिपरायणे। वर्तस्व पुरुषव्याघ यंविज्ञानामि ते ऽन्य || MBH. 12, 2451. — caus. kundmachen, hersagen: श्रव कृता तपाच्छकोक्तेतं तं संव्यजिज्ञपत् RĀGĀ-TAR. 3, 180.

— सम् 1) eines Sinnes sein, einträchtig sein; sich vertragen, sich einigen: सं वो मनोसि ज्ञानताम् RV. 10, 191, 2. सं ज्ञानते मनसा 30, 6. AV. 7, 52, 2. सं ज्ञानत् स्वैर्दत्तैरमूर्याः RV. 1, 68, 8(4). सं ज्ञानते न यत्तते मिथ्यस्ते 7, 76, 5. संज्ञानाना उपै सीदृव्यमित् 4, 72, 5. इलिता हिं श्वरे संज्ञानानाः बेरुहिति ÇAT. BR. 2, 3, 1, 3. सं ज्ञानाद्यो श्वावापृथिवी VS. 2, 16. ÇAT. BR. 1, 8, 3, 12. 3, 6, 4, 14. 4, 2, 2. 9, 1, 21. सं ज्ञानीतो मे यामः 4, 1, 5, 7. वरके गावः संज्ञानते 5, 4, 3, 19. 7, 1, 1, 7. AIT. BR. 2, 20. 3, 16. तस्मै विशः संज्ञानते संमुखा रूपमनसः 8, 25. तस्मादृप्यामित्रै संगत्य नामा चेदभिवदतो ऽन्यो ऽन्ये समवे ज्ञानाते sie verstehen einander ÇAT. BR. 13, 1, 6, 1. mit dem instr. oder acc. P. 2, 3, 22. पित्रा oder पितरं संज्ञानीते Sch. संज्ञानीष्व स्वमीशा च VOP. 5, 13. — 2) Jmd Etwas anzeigen, bestimmen: यन्नः पिता संज्ञानीते तस्मिंस्तिष्ठामहे वयम् AIT. BR. 7, 18. BHĀG. P. 9, 16, 34. इन्द्रिये द्वाणासंज्ञातं नासिकेत्यमिसंजिका der für den Geruch bestimmte Sinn MBH. 12, 9095. — 4) (eine Schuld) anerkennen: शतं संज्ञानीते P. 1, 3, 46, Sch. — 5) als das Seinige anerkennen, in Besitz nehmen (vgl. simpl. u. 3.): सर्वं संज्ञानीयाः SADDH. P. 4, 23, b. 24, a. — 6) gedenken, mit Wehmuth sich erinnern, act. (überhaupt nur in dieser Bed. nach den Grammatikern) P. 1, 3, 46. VOP. 23, 37. मातरं oder मातुः (vgl. P. 2, 3, 52) संज्ञानाति P., Sch. संज्ञानीहि शिवम् VOP. 3, 13. — 7) verstehen: सर्वभूतस्तुतं तस्मात्संज्ञेः R. 2, 33, 17. — 8) aufpassen: संज्ञानानान्यरिलुरवाचानुवर्णव्याहृत्। लङ्का समाविशद्वित्रै BHĀTT. 8, 27. — Vgl. संज्ञा. — caus. 1) einig machen, zusammenbringen: ता एतर्पचा समज्ञपयत् AIT. BR. 2, 20. AV. 6, 74, 5. — 2) Jmd beruhigen, zufriedenstellen: रविस्तु संज्ञापयते लोकाविष्मितुत्वम्: MBH. 12, 12567. नागरिकवृत्त्या संज्ञापयैनाम् ÇAK. 60, 2. अहृमेनो संज्ञापयामि (WEBER: ich werde sie schon wieder zum Bewusstsein bringen) MALĀV. 58, 17. — 3) machen, dass Jmd sich beruhigt, sich in Etwas ergiebt, euphem. vom Tödten des Opferthieres, das nicht gewaltsam zum Tode geführt werden, sondern sich den Göttern hingeben soll (vgl. Einl. zum NIA. XXXIX): यत्पव्यं संज्ञपयति विशासति तत्तं ग्रति ÇAT. BR. 2, 2, 2, 1. 4, 5, 2, 1. 6, 2, 1, 6. 13, 2, 8, 2. इदं वै पश्यो: संज्ञपयमानस्य प्राणो वातमपिपव्यते 3, 7, 4, 9. 8, 1, 15. जीवत्याः संज्ञपयावा वा ÇĀÑKB. CR. 4, 14, 14. ÅÇV. GRĀH. 1, 11. KAUC. 44. संज्ञापय तुरं विधिव्यावाकास्तदा MBH. 14, 2645. संज्ञसमश्चम् HARI. 11236. fgg. पश्चूप्यश्च व्याधे। संज्ञा-